

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
	भाखल दरिया साहेब सत सुकृत बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही। ग्रन्थ जग साँगी (भाखल दरिया साहेब) छन्द - 9					
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
	यहि भाँति परिपंच केशो, भारथ के महिमा कियो। मुक्ति कारन युद्धि ठानेवो, तिन्ह की गति कैसे दियो॥ पंडित ज्ञाता युद्धि करके, पुण्य फल अरथावहिं। युद्धि करिके पुण्य होवे तो, काहिके तप करि धावहिं॥ पाँचों पाण्डों महा युद्धि करि, छल मता न बिचारिया। सुर नर मुनि औ पंडित ज्ञाता, सकल जच्छ बढ़ाइया॥ सोरठा - 9 पंडित करहु विचार, गीता भारथ समुझो गुनो। उतरन चाहो पार, दया धरम चिन्हे बिना॥ साखी - 9 भरत युधिष्ठिर अरजुन, कनुल औ सहदेव। भीम सेन जन पाण्डो के, इन्ह कर बुझहु भेव॥ चौपाई भारत करि जब घर चलि आए। आनन्द मंगल दुंदभी बजाए॥ क्रीडा विनोद करहिं बहु रंगा। कृष्ण विराजहि एके संग।॥ घर घर हरखा आनन्दित लोगु। कहिं हरखा कहीं उपजा सोगु॥ कहिं पाप कहिं पुण्य कर आशा। इमि करि होय यम कर त्रासा॥ केतिक दिवस बित जब गयऊ। राजा के तब विस्मय भयऊ॥ प्रभुता पाय करे शैतानी। ताके जीवन जन्म भौ हानी॥ राय युधिष्ठिर अचरज देखा। अचरज काल देह में पेखा। अचरज बात कहां ले राखों। ऐसन भेद काही से भाखों॥ कहां होत यह अचरज गाढ़े। बिना शीश रुण्ड सब ठाढ़े॥ दिशा चारि होय घेरहिं आई। अचरज बात कहा नहि जाई॥ औगुन कवन होत असनेहा। बिना शीश रुण्ड सभ खेहा॥					
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - २			
सतनाम			केहि ऐगुन के कारने, अस उपजत है भाव।		सतनाम	
			श्रीकृष्ण सत भाखहु, मोहिं होत पछताव॥			
			चौपाई			
सतनाम			पाण्डो नन्दन सुनो अस बानी। वंश अंश मारेऊ तुम्ह जानी॥		सतनाम	
			बन्धु मारी तुम भारथ कीन्हा। यह सब कौतुक ताकर चीन्हा॥			
सतनाम			विना शीश सब रुण्ड देखावे। ऐसन औगुन मोहि न भावे॥		सतनाम	
			कोटि कोटि तीरथ करि आवहु। यज्ञ उपावन कुण्ड खनावहु॥			
सतनाम			नेवता कराय जेवावहु साधु। तब मेटे तन के अपराधु॥		सतनाम	
			बन्धु वर्ग बहुते तुम मारा। सो छेके उपराध अपारा॥			
सतनाम			कन्या दान और हस्ती घोरा। ये सब पाइ नर चाहे बटोरा॥		सतनाम	
			साखी - ३			
			राजपाट धन सम्पति, कन्या देत जो दान।			
सतनाम			जीव दान जग दुर्लभ है, इन्ह ते और न आन॥		सतनाम	
			चौपाई			
सतनाम			श्री कृष्ण तुम आगम देवा। तुम तेजि औरि करों नहि सेवा॥		सतनाम	
			तोहरे कहे हम भारथ किन्हा। गुन औगुन एको नहि चिन्हा॥			
सतनाम			तोहरे कहे दोष मोहि लागा। गन गन्धर्व में भयऊ अभागा॥		सतनाम	
			हत्या छुटे केहि परकारा। कैसे उतरब भवजल पारा॥			
सतनाम			यह बन्धु वर्ग है हत्य भारी। यहि करम से लेहु उबारी॥		सतनाम	
			हत्या करमज ऊंच पहारा। कैसे उतरब भवजल पारा॥			
			साखी - ४			
सतनाम			श्री कृष्ण समुझावहु, करमज यह व्यवहार।		सतनाम	
			हत्या करमज छूटे जेहिते, उतरेऊँ भवजल पार॥			
			चौपाई			
सतनाम			राय युधिष्ठिर सुनहु भेवा। पहिले करहु जग्य कर सेवा॥		सतनाम	
			तीरथ तीरथ से जल मंगावहु यज्ञ उपावन कुण्ड खनावहु॥			
सतनाम			अरध घंट बांधहु अनुमान। यज्ञ सांगी के धरहु ठेकाना॥		सतनाम	
			देश-देश के साधु सभ आवहीं। महा आनन्दित भोजन पावहीं॥			
सतनाम			जै जै मंगल होत उचारा। बाजे घंट होत झनकारा॥		सतनाम	
			2			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	गुप्त सनेही सन्त व्यवहारा। उहै आय करिहैं जेवनारा॥	सतनाम	कलऊ अहे नर नरक सनेही। ताहि भूलि छुवहु जनि देही॥	सतनाम	कामिनि काल देह धरि आई। मुगुध रूप होय ज्ञान छोड़ाई॥	सतनाम
सतनाम	कामिनि कनक काल की बेरी। इ नाहि बसि भइ काहु केरी॥	सतनाम	सात द्वीप नव खाण्ड शरीरा। कामिनि काल घेरे बड़ बीरा॥	सतनाम	पर नारी से अंग छुआवे। अनेक जन्म तेहि काल नचावे॥	सतनाम
सतनाम	पर नारी है विष की खानी। बोरे काल नरक सहिदानी॥	सतनाम	नारी नरक सकल संसारा। बिना भेद नहिं उतरहिं पारा॥	सतनाम	राजा परहु नरक के घोरा। सेवहु पांव द्रोपदी केरा॥	सतनाम
सतनाम	चौदह जम है चौकी द्वारा। कामिनि कनक सदा रखावारा॥	सतनाम	साखी - ५			
सतनाम	सर्व मास जो खात है, परनारी से नेह।				सतनाम	भक्ति भेद नहि जानहि, फिर-फिर धरिहैं देह॥
सतनाम	चौपाई				सतनाम	सर्व मास विप्र जो खाई। जन्म अनेक सो नरकहिं जाई॥
सतनाम	मीन खाय द्विज करे अचारा। होय काल सोनहा अवतारा॥	सतनाम	मीन खाय द्विज आशीष देई। महा कोटि सिर पातक लेई॥	सतनाम	मासु अहारी द्विज लागे पाया। चौसठ जनम नरक घट छाया॥	सतनाम
सतनाम	मीन खाय द्विज अक्षत डारा। सकल महातम होय वेकारा॥	सतनाम	राय युधिष्ठिर सुनहु विचारा। करहु यज्ञ जेहि उतरहु पारा॥	सतनाम	साखी - ६	
सतनाम	देश देश दल भेजहु, संत जेवावहु जानि।				सतनाम	बन्धु वर्ग कुल हत्या, मेटे विष की खानि॥
सतनाम	चौपाई				सतनाम	श्री कृष्ण कहो समुझाई। जाते हत्या सभ मेटि जाई॥
सतनाम	मीन खाय कन्या देइ दाना। जन्म अनेक स्वान कर थाना॥	सतनाम	मीन खाय द्विज करु अस्नाना। खर के जन्म फेरि होय निदाना॥	सतनाम	मीन खाय जल अर्ध शरीरा। कऊआ जन्म गंडू के तीरा॥	सतनाम
सतनाम	पर नारी वेस्वा संग नेहा। आगे धरिहैं गीध कर देहा॥	सतनाम	वन्धु वर्ग जिन्ह जंगल जारा। होय अन्ध कुष्टी अवतारा॥	सतनाम	3	
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
साधु	सनेही	जो	नीन्दा	करई।	अजगर	होय नरक सो परई॥
भगित	भंग	नृप	सुनी	के	राखा।	गुन ऐगुन एको नहि भाखा॥
भक्ति	द्रोह	की	सुने	बानी।	राजा	के धर हत्या हानी॥
संत	सनेही	न	करे	विचारा।	भरमत	परहि नरक की धारा॥
भक्ति	द्रोह	मंडल	मंह	होई।	राज	हानी तांहा जात विगोई॥
साखी - ७						
देस देस दल भेजहु, दुर्मती कुमती मेटाए।						
बन्धु वर्ग कुल हत्या, सहजे देऊ बोहाए॥						
चौपाई						
कहो	जनार्दन	सो	सत	बानी।	लछन	भेद कहो सहिदानी॥
कवन	करम	है	काके	संगा।	वंश	बीज कैसे होय भंगा॥
सेवा	नारि	जो	शक्ति	विचारी।	वंश	बीज होखे खाय कारी॥
जीवै	पुरुष	तौ	धन	के नाशा।	होखे	धन तब पुरुष विनाशा॥
मीन	खाये	जो	द्विज	की नारी।	जंगल	माह कै होय बिलारी॥
बारि	देइ	द्विज	कन्या	दाना।	तब	कीछु कर्मज मेटु निदाना॥
साखी - ८						
अमीष भोजन खात द्विज, क्षत्री देइ आशीष।						
तेहि ऐगुन के कारने, अजगर जन्म पचीस॥						
चौपाई						
आमीष	भोजन	खात	अज्ञानी।	जग	में धरे	गोह की खानी॥
कहे	जनार्दन	मन	पतिआई।	ऐगुन	देखात	जीव डेराई॥
सुनहु	युधिष्ठिर	परम	सनेही।	सर्व	मासु	है मीन की देही॥
सो	आमीष	द्विज	भोजन	करई।	तीनि	जन्म धरि नरकहि परई॥
नैन	हीन	किरमिज	जो	नाऊँ।	गोलरि	बाँधु विष्टा के ठाऊँ॥
गया	गोमती	पिण्ड	अस्थाना।	मीन	खाये	पुनि नरकहि जाना॥
मीन	खाये	द्विज	करे	अचारा।	कुम्ह	के जन्म सो होय मजारा॥
अस	ऐगुन	द्विज	करत	अभागा।	श्राप	करम छत्रीनळ कंह लागा॥
छोड़हु	ऐगुन	द्विज	कर	संगा।	ऐगुन	देखो बतीसो अंगा॥
कारो	विप्र	तन	काल	सनेही।	तोरे	अवगुन व्यापेव देही॥
करम	कुसंजम	करे	जो	जानी।	छुअत	तेहि नरक की खानी॥
गुप्त	बनारस	जग्य	जो	ठाना।	पारवती	शंकर को ज्ञाना॥
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	कलऊ दूत धरे देहा। माहा बीज के उठे खोहा॥	सतनाम	राय युधिष्ठिर चित गहि राखहु। पीछे दोषज्ञ हमहिं जनि भाखहु॥	सतनाम	राय युधिष्ठिर जग्य अनुमाना। जग्य आरम्भ के किन्ह ठिकाना॥	सतनाम
सतनाम	जोगी जती तपे संन्यासी। बैरागी दर सेवे उदासी॥	सतनाम	धार छोड़ि बन लेहि नेवासा। सब साधुन को भौ विश्वासा॥	सतनाम	सकल भेष मिलि किन्ह पयाना। गन गन्धर्व के आदर ठाना॥	सतनाम
सतनाम	देस देस के तपसी धाये॥ पत्र कुटी तांहा बहुविधि छाये॥	सतनाम	नाना भेष जो जुगुति बनाया। जोगी यति तपसी सभ धाया॥	सतनाम	बहुत भांति किन्हों जेवनारा। जेवै बैठे सभ अधिकारा॥	सतनाम
सतनाम	करि परसाद भये सब ताजा। जग्य सांगी घंट नाही बाजा॥	सतनाम	पाण्डों के जीव संशय परी। घंट ना बाजु कुदीन की धरी॥	सतनाम	सभ मिलि गए कृष्ण के पासा। बोले जाय वचन परगासा॥	सतनाम
सतनाम	दण्ड प्रणाम कीन्ह दल को साजा। औगुन कवन घंट नाहि बाजा॥	सतनाम	वैरागी आये सन्यासी। गिरि कंदर मथुरा के वासी॥	सतनाम	मैं किन्हो सभ प्रभु के काजा। काह कुजोग घंट नहिं बाजा॥	सतनाम
सतनाम	साखी - ११					सतनाम
सतनाम	कहो जनार्दन जानिके, पन हीन भौ मोर।					सतनाम
सतनाम	काहे ना घंट बाजिया, महा सूरति भव थोर॥					सतनाम
सतनाम	चौपाई					सतनाम
सतनाम	पाण्डो नन्दन सुनो व्यवहारा। सतगुरु बोध नाहि जेवनारा॥	सतनाम	सतगुरु बिना नहि जग को साजा। सतगुरु बिना घंट नहि बाजा॥	सतनाम	सतगुरु हंस जो आवे कोई। बाजे घंट सांगी जग होई॥	सतनाम
सतनाम	श्री कृष्ण तुम अन्तर जामी। यह सभ आए केहके स्वामी॥	सतनाम	चुंडित मुंडित जटा धारी। काको सेवों सभ अधिकारी॥	सतनाम	लिन्ह भेखा जटा को साजा। इनके भोजन घंट ना बाजा॥	सतनाम
सतनाम	इन्ह मंह ऐगुन कैसे लागा। एको हंस नहि सभ है काग॥	सतनाम	श्री कृष्ण भाखहु बलवीरा। भक्ति हेतु प्रतिमा भव भीरा॥	सतनाम	साखी - १२	
सतनाम	चारि खूंट के भेख सभ, नाना रंग तरंग।					सतनाम
सतनाम	काहे ना घंटे बाजिया, महा सूरति भव भंग॥					सतनाम
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			चौपाई			
सतनाम	पाण्डो नन्दन सुनो सत बानी। तुम्ह से कहो भोखा सहिदानी॥	सतनाम	सन्यासी आये भगवाना। मुक्ति भेद इन्ह मरम न जाना॥	सतनाम	घांट ना बाजे उनके खाये। काल सनेही भेष बनाये॥	सतनाम
सतनाम	जटा बनाय भोख धरि साजा। इनके भोजन घांट ना बाजा॥	सतनाम	राजा देखाहि सभो संदेहा। घांट ना बाजे अहे विदेहा॥	सतनाम	श्री कृष्ण ध्यान धरि देखा। कवन स्वरूप आए सभ भोखा॥	सतनाम
सतनाम	सन्यासी कहिए भगवाना। नाहर पवन जो अहे समाना॥	सतनाम	सन्यासी कहिए अधिकारा। मद मासु यह करे अहारा॥	सतनाम	मास अहारी करे सुख बासी। निर्गुन भेद करही परगासी॥	सतनाम
सतनाम	मद मास मीन जम को साजा। इनके भोजन घांट ना बाजा॥	सतनाम	गेरुआ वस्त्र भोखा बनाए। घांट ना बाजे इनके खाए॥	सतनाम	मास खाय बढ़ाइन कामा। सब जीव जाहिं नरक के धामा॥	सतनाम
सतनाम	काम क्रोध उपजे बल भारी। भोजन भोग करहि अधिकारी॥	सतनाम	गेऊआ वस्त्र बुंद परगासा। सत्तर जन्म नरक घाट बासा॥	सतनाम	स्वान जन्म धरि जग मे आवै। जीव्हा इन्द्र सहज छुआवै॥	सतनाम
सतनाम	नख से द्वारा नीरंजन ठैऊ। अदारावली के तीनि बालक भैऊ॥	सतनाम	ताहि संयोग रूधिर बहराना। ताते भये भेष भगवाना॥	सतनाम	लोहुआ मंडल भोखा बनाए। गन गन्धर्व मिलि औगुन लाए॥	सतनाम
सतनाम	बनिज विरोध करहि व्यवहारा। एको जन्म नाही होय सुधारा॥	सतनाम	कृषि कर्म बाध को साजा। निस दिन औगुन होत अकाजा॥	सतनाम	विग्रह करहि तीरथ मंह जाई। निस दिन उपमा यहि बड़ाई॥	सतनाम
सतनाम	राजा गाय बरन मुख देखा। विग्रह लंछन काल को भोखा॥	सतनाम	गौरी ग्याता लोचन नेहा। काल सनेह न संत सनेहा॥	सतनाम	गहवर गुंजत पीताम्बर देखा। फिरि वरनो विषय कर रेखा॥	सतनाम
सतनाम		साखी - १३				
सतनाम		इनके खाये घांट ना बाजे पण्डो नन्दन सुनि लेहु।				
सतनाम		सतगुरु बालक पुजहु, हमें दोष जानि देहु॥				
सतनाम		चौपाई				
सतनाम	श्री कृष्ण अस ज्ञान विचारा। हम सेवक निजु दास तुम्हारा॥	सतनाम				
सतनाम		7				
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	अब	साहब	निजु	कहहु	संदेशा।	सतगुरु
सतनाम	एहि	संसार	रहहि	केहि	भेसा।	उनकी
सतनाम	कवन	पढ़हि	वोए	वेद	पुराना।	सतगुरु
सतनाम	जाके	साहब	बोलहु	बाता।	कवन	देश
सतनाम	सात	कोटि	अव	अस्सी	हजारा।	एता
सतनाम	इनके	पुजे	घंट	नहिं	बाजा।	सतगुरु
सतनाम	जग्य	सांगी	जेहि	पुजे	होई।	केते
सतनाम	भेखा	पीताम्बर	सभै	संन्यासी।	राधा	बाल
सतनाम	चुंडित	मुंडित	तुलसी	काना।	डिम्ब	अचार
सतनाम	अल्प	आहारी	दूधाधारी।	पवन	रूप	आए
सतनाम	इन्है	कै	पूजे	जग्य	सांगी	न
सतनाम	साखी	-	१४			
सतनाम	राजा	कहेऊ	पुकारि	के,	सुनहु	वचन
सतनाम	सतगुरु	भेद	बतावहु,	ताके	अरपेवो	शीश॥
सतनाम	चौपाई					
सतनाम	पांडव	नन्दन	सुनहु	सत	बानी।	सत
सतनाम	उन्ह	मुखा	देखो	होत	विवेका।	सात
सतनाम	तीनि	लोक	सो	बाहर	बाता।	तहां
सतनाम	ताकर	बालक	सुपच	देवा।	करहु	जाय
सतनाम	सात	कोटि	के	भोजन	करावे।	उनके
सतनाम	जो	जस	करें	सो	पावे	सोई।
सतनाम	कर्म	काम	यह	व्यवहारा।	तीर्थ	व्रत
सतनाम	मारि-मारि	करे	जीव	घाता।	अंत	काल
सतनाम	फांसी	लाय	जीव	जो	मारा।	वंश
सतनाम	जहर	देइ	जीव	घात	खुआरी।	सो
सतनाम	मीन	खाय	विप्र	को	जाया।	वंश
सतनाम	ताही	अस	दृष्टि	अवरि	नहि	कोई।
सतनाम	अइसन	विधि	धर	जीवे	कोई।	मुखा
सतनाम	अइसन	विधि	धर	जीवे	कोई।	मुखा
सतनाम	अइसन	विधि	धर	जीवे	कोई।	मुखा

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - १५			
सतनाम			अपने अपने औगुन, या जग जात बिगोए।		सतनाम	
			सुनो युधिष्ठिर अर्युन, खोजहु शब्द बिलोए॥			
			चौपाई			
सतनाम			श्री कृष्ण जब ऐसन भाखा। राय युधिष्ठिर चित में राखा॥		सतनाम	
			जाहु भीम सुपच के पासा। निती जाय करहु परगासा॥			
			सूपच भगत से विनती भाखाव। जग्य काज के विनती राखाव॥			
सतनाम			जग्य काज के लेहु लिआई। भीम सेनि कहव समुझाई॥		सतनाम	
			साखी - १६			
			सुपच जन से भाखव, कर जोरि विनय हमारी।			
सतनाम			तुम्हें भोजन जग सांगी हो, जुग-जुग बचन तोहारी॥		सतनाम	
			चौपाई			
			भगत सुदर्शन सुपच नाऊँ। खोज करन गये पुष्कर गाऊँ॥			
सतनाम			भगत सुदर्शन सुनहु साखी। राय युधिष्ठिर विनती भाखी॥		सतनाम	
			श्री कृष्ण कह जबहि दीन्हा। सुपच भगत सत का चीन्हा॥			
			भोजन करावहु सुपच आनी। पुरन जग्य होय सहिदानी॥			
सतनाम			श्री कृष्ण राजे अस भाखा। भोजन सुपच चित में राखा॥		सतनाम	
			चलहुं भगत जनी लावहु बारा। तोहरे गये बहुत उपकारा॥			
			जग्य काज होय व्यवहारा। राय युधिष्ठिर बहुत दुलारा॥			
सतनाम			साखी - १७		सतनाम	
			देस देस के राजा, गन गंधर्व सभ झारी।			
सतनाम			चलहु भगत उठी बेगे, तोहरि सभ अनुहारी॥		सतनाम	
			चौपाई			
			जाय कहो राजा से जाई। राजा के घर भोजन न खाई॥			
सतनाम			राजा वेस्वा जाति शिकारी। महा करम विषे विस्तारी॥		सतनाम	
			तीनि सौ साठि कर्म इन्ह संगी। भोजन करत सत होय भंगा॥			
			राजा वेस्या छुवे न कोई। इनके छुवे औगुन होई॥			
सतनाम			राजा के घर भोजन न पावै। वेस्या छुए नरक के जावे॥		सतनाम	
			राजा वेस्या धीमर पासी। इन्ह घर भोजन जम के फांसी॥			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
			साखी - १८			
सतनाम			चारि जाति के दरशन, दुरभै करवे जानी।		सतनाम	
			इन्ह घर भोजन न पाइए, जात नरक की खानी॥			
			चौपाई			
सतनाम			कहा भीम कृष्ण से जाई। राय युधिष्ठिर सुनहु आई॥		सतनाम	
			सुपच भग्त है जाति कुवानी। कहत बचन बोले अभिमानी॥			
			राजा के घर हम नहि जावहीं। नीच के घर भोजन नहिं पावहीं॥			
सतनाम			राजा घातिक खोले शिकारा। इनके सीर हत्या के भारा॥		सतनाम	
			सुपच भग्त अस कहे कुवानी। मारि थपेरे करितो जीव हानी॥			
			मानेव त्रास मैं तोहरी राया। ताते इतेवो ना सुपच काया॥			
			साखी - १९			
सतनाम			अस नीच जाति के यहां, हमें पठावो केहि काज।		सतनाम	
			गन गंधर्व सभ देवता, ताहि ना आवत लाज॥			
			चौपाई			
सतनाम			राजा हमहि पठायो सुपच पासा। बोलहि अवगुढ़ वीषे कै त्रासा॥		सतनाम	
			सुपच भग्त कवन अस चीन्हा। अति मरजाद जनारदन दीन्हा॥			
			सभ देवन मंह सुपच भारी। जाकी महिमा होय अधिकारी॥			
सतनाम			जेहि देखो जीव होय उदासा। अति मरजाद कीन्ह परगासा॥		सतनाम	
			उपजे मोह क्रोध की बानी। सुपच मारि करो जीव हानि॥			
			साखी - २०			
सतनाम			श्री कृष्ण सिर ऊपरे, औरि युधिष्ठिर राय।		सतनाम	
			सुपच मारन ताकेवे, रहेऊ मनहि पछताय॥			
			चौपाई			
सतनाम			कहे युधिष्ठिर विपति गाढ़ी। सुपच महिमा कैसे बाढ़ी॥		सतनाम	
			सुपच कवन देश के देवा। श्री कृष्ण तुम भाखाहु भेवा॥			
			साखी - २१			
सतनाम			सुपच नाहि अति नीच कुल, महिमा धरेवो अपार।		सतनाम	
			ताकर भेद बतावहु, जाते होय ऊबार॥			
			चौपाई			
सतनाम			सुनहु युधिष्ठिर सतगुरु बानी। सुपच के भाखो सहि दानी॥		सतनाम	
			10			
सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
सतनाम	गन गनर्धव आये सभ देवा। जब तुम्ह किन्ह जग्य कर सेवा॥	सतनाम	सन्यासी आये भगवाना। भग्त मण्डली को परधाना॥	सतनाम	बैठक भोखा सभो दल साजा। औगुन कवन घांट नाही बाजा॥	सतनाम
सतनाम	तब मै देखा ध्यान लगाई। बैठे भोखा सभ पसु बनाई॥	सतनाम	तब अपने चित भयो विसेखा। मानुष रूप सुदश्न देखा॥	सतनाम	सुपच के सभ ध्यान लगावे। देखि सभ मस्तक नावे॥	सतनाम
सतनाम	सुनहु भीम यह वचन हमारा। तुम नाहि जानहु भेद निनारा॥	सतनाम	साखी - २२	सतनाम	कहे श्रीकृष्ण तब बांचहु, जब मानहु कहा हमार।	सतनाम
सतनाम	सुपच भोजन जब करिहै, तब मेटहि नरक अपार॥	सतनाम	चौपाई	सतनाम	कहे भीम मोहि अति अनाला। मारो सुपच जाय पताला॥	सतनाम
सतनाम	श्री कृष्ण भाखो तुम भोवा। सुपच कवन देस के देवा॥	सतनाम	सुपच महिमा बहुत बड़ाई। गन गन्धर्व सभसे अधिकाई॥	सतनाम	सुपच के आवे जब चिन्हा। आगे होय के होहु अधिना॥	सतनाम
सतनाम	सुनहु भीम सुपच के बाता। ध्यान धरि देखा हम ज्ञाता॥	सतनाम	उनके महिमा देऊँ देखाई। नारद समेत चित पतिआई॥	सतनाम	पुष्कार छत्र महा अधिकारा। सात हजार दीपक तहां बारा॥	सतनाम
सतनाम	बैठे भोखा सभै सरदारा। सभ परिछाही देखाहि किनारा॥	सतनाम	गदहा कुकुर गीध विलावा। मीन मास इन सभ मिलि खावा॥	सतनाम	ताते भये सभ गीध विलाई। सतगुरु बिना मुक्ति नहि पाइ॥	सतनाम
सतनाम	मकरंद दुत सभनि के माथा। ताते ग्यान रहे नहि हाथा॥	सतनाम	युधिष्ठिर गाय गोह नारदा। सभ मिलि देखा पसु का फंदा॥	सतनाम	मानुष रूप सुदरसन देखा। निज ग्यान जब चित में पेखा॥	सतनाम
सतनाम	साखी - २३	सतनाम	मीन मास जो खात है, सो तो जाति चंडाल।	सतनाम	सीपट काग का जन्म पावे, फिरि भरमावे काल॥	सतनाम
सतनाम	चौपाई	सतनाम	जाहु युधिष्ठिर सुपच पासा। बोलहु जाय बचन परगासा॥	सतनाम	सुपच भग्त करिहे जेवनारा। बाजहि घांट होए झनकारा॥	सतनाम
सतनाम	11	सतनाम		सतनाम		सतनाम

सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम
मीनती किन्ह कृष्ण से थोरा। पूरन जग्य भया नहि मोरा॥	सतनाम	कृष्ण कहा बेगि तुम धावहु। भग्त के जाय बेगि ले आवहु॥	सतनाम	कुबुद्धि वचन केहु मन्दिल में भाखा। सुपच भग्त जानि चित राखा॥	सतनाम	गये युधिष्ठिर सुपच पासा। विनती जाय किन्ह परगासा॥
दया दरद उपजा तब भारी। चले तुरंत ताहां पगु ढारी॥	सतनाम	सुपच बहुरी किन्ह जेवनारा। सात बार घंटा झनकारा॥	सतनाम	गन गन्धर्व देवता सभ धाये। सुपच भग्त के चरन सिर नाए॥	सतनाम	युधिष्ठिर बोले धन्य अवतारा। सभ विधि किनी मोर उपकारा॥
साखी - २६						
सुपच भग्त अस भाख ही, श्री कृष्ण सुन लेहु।	सतनाम	भेद हमारा नहि जानहु, भक्ति काहे कहि देहु॥	सतनाम	साधु साधु सभ कहत है, साधु समझो पार।	सतनाम	अलल पक्ष कोई एक है, पंछी कोटि हजार॥२७॥
अलल पछ का केचुआ, गिरते किया विचार।	सतनाम	सूरति साधि चेतनि हुआ, जाये मिला परिवार॥२८॥	सतनाम	अलल पक्ष आवे नहीं, अपने सूत कहं लेन।	सतनाम	बोय अलीन यह लीन है, जाय करे सुख चैन॥२९॥
साधु साधु सभ एक हैं, ज्यों पोस्ता का खेत।	सतनाम	कोई कुदरति लाल है, अवर सेत का सेत॥३०॥	सतनाम	ग्रन्थ जग साँगी पूर्ण		
13	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम	सतनाम